५ विषय-सुची

(अन्तरानुगम)

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	१	
	विषयकी उत्थानिका	**१-४**
१)	धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा	१
२)	अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश-भेद-कथन	,,
३)	नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव इन छह भेद-रूप अन्तरका स्वरूप-निरूपण	१-३
४)	कौनसे अन्तरसे प्रयोजन है, यह बताकर अन्तरके एकार्थ-वाचक नाम	३
५)	अन्तरानुगमका स्वरूप तथा उसके द्विविध-निर्देशका सयु-क्तिक निरूपण	,,
	२	
	ओघसे अन्तरानुगमनिर्देश	**४-२२**
६)	मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर-निरू-पण, तथा सूत्र-पठित 'णत्थि अंतरं, णिरंतरं' इन दोनों पदोंकी सार्थकता-प्रतिपादन	४-५
७)	मिथ्यादृष्टि जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरका सोदाहरण निरूपण	५
८)	सम्यक्त्व छूटनेके पश्चात् होनेवाला अन्तिम मिथ्यात्व पहलेका मिथ्यात्व नहीं हो सकता, इस शंकाका समाधान	५
९)	मिथ्यादृष्टि जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर-का सोदाहरण निरूपण	६
१०)	सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा सोदा-हरण जघन्य अन्तर-प्रतिपादन	७
११)	उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर-निरूपण	८
१२)	सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा सोदा-हरण जघन्य अन्तर-निरूपण तथा तदन्तर्गत अनेक शंका-ओंका समाधान	९-११
१३)	उपर्युक्त जीवोंका सोदाहरण उत्कृष्ट अन्तर	११-३३
१४)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरोंका सोदाहरण निरूपण	१३-१७
१५)	चारों उपशामक गुणस्थानोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	अन्तरोंका सोदाहरण निरूपण	१७-२०
१६)	चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका नाना और एक जीव की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर	२०-२१
१७)	सयोगिकेवलीके नाना और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरके अभाव प्रतिपादन उत्कृष्ट अन्तर	२०-२१
	३	
	आदेशसे अन्तरानगुगमनिर्देश	**२२ से १७९**
	१ गतिमार्गणा	**२२ - ३१**
	(नरकगति)	
१८)	नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि और असयंतसम्यग्यदृष्टि जीवोंके नाना और एक जीव की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरोंका सोदाहरण निरुपण	२२-२३
१९)	नारकियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका दोनों अपेक्षाओंसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरोंका सदृष्टान्त निरुपण	२४-२६
२०)	प्रथम पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके मिथ्यादृष्टि और असयंतसम्यग्दृष्टि नारकियोंके दोनों अपेक्षाओंसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरोंका दृष्टान्तपूर्वक प्रतिपादन	२७-२८
२१)	सातों पृथिवियोंके सासादन सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर	२९-३१
	(तिर्यंचगति)	**३१-४६**
२२)	तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर	३१-३२
२३)	तिर्यंच और मनुष्य जन्मके कितने समय पश्चात सम्यक्त्व और संयमासंयम आदिको प्राप्त कर सकते हैं, इस विषयमें दक्षिण और उत्तर प्रतिपत्तिके अनुसार दो प्रकारके उपदेशोंका निरूपण	३२
२४)	सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तकके तिर्यंचोंका सोपपत्तिक अन्तर-निरूपण	३३-३७
२५)	पंचेन्द्रियतिर्यंच पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिमती मिथ्यादृष्टियोंका दोनों अपेक्षाओंसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर	३७-३८
२६)	तीनों प्रकारके तिर्यंचोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका दोनों अपेक्षाओंसे जघन्य	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	और उत्कृष्ट अन्तर	३८-४१
२७)	तीनों प्रकारके असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंका दोनों अपेक्षाओंसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर	४१-४३
२८)	तीनों प्रकारके संयतासंयत तिर्यंचोंका दोनों अपेक्षाओंसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर	४३-४५
२९)	पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तकोंका दोनों अपेक्षाओंसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर	४५-४६
	(मनुष्यगगति)	**४६-५७**
३०)	मनुष्य, मनुष्यपर्याप्तक और मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर	४६-४७
३१)	भोगभूमिज मनुष्योंमें जन्म लेनेके पश्चात् सात सप्ताहके द्वारा प्राप्त होनेवाली योग्यताका वर्णन	४७
३२)	उक्त तीनों प्रकारके सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका अन्तर	४८-५०
३३)	तीनों प्रकारके असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका अन्तर	५०-५१
३४)	संयतासंयतसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक तीनों प्रकारकें मनुष्योंका अन्तर	५१-६३
३५)	चारों उपशामक मनुष्यत्रिकोंका अन्तर	५३-५५
३६)	चारों क्षपक, अयोगिकेवली और सयोगिकेवली मनुष्यत्रिकोंका अन्तर	५५-५६
३७)	लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंका अन्तर	५६-५७
	(देवगति)	**५७-६४**
३८)	मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका अन्तर	५७-५८
३९)	सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंका अन्तर	५९-६२
४०)	भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी तथा सौधर्म,ईशानकल्पसे लेकर शतार-सहस्रारकल्प तकके मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका अन्तर	६१-६२
४१)	उक्त देवोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर	६२
४२)	आनतकल्पसे लेकर नवग्रैवेयक-विमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अन्तर	६२-६३
४३)	उक्त कल्पोंके सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंका अन्तर	६४
४४)	नव अनुदिश और पांच अनुत्तरविमानवासी देवोंमें अन्तराभावका प्रतिपादन	६४
	२ इन्द्रियमार्गणा	**६५-७७**
४५)	एकेन्द्रिय जीवोंका अन्तर	६५-६६
४६)	देव मिथ्यादृष्टिको एकेन्द्रि-	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	योमें ले जाकर, असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन तक उनमें परिभ्रमण कराके पीछे देवोंमें उत्पन्न कराकर देवोंका अन्तर क्यों नहीं कहा? इस शंकाका समाधान	६५
४७)	एकेन्द्रिय जीवको त्रसकायिक जीवोंमें उत्पन्न कराकर अन्तर कहनेसे मार्गणाका विनाश क्यों नहीं होगा? इस शंकाका समाधान	६६
४८)	बादर एकेन्द्रिय जीवोंका अन्तर	६६-६७
४९)	बादर एकेन्द्रियपर्याप्त और बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका अन्तर	६७
५०)	सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका अन्तर	६८-६९
५१)	द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और उन्हींके पर्याप्तक तथा लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंका अन्तर	६८-६९
५२)	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय-पर्याप्तक मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर	६९-७१
५३)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक दोनों प्रकारके पंचेन्द्रिय जीवोंका अन्तर	७१-७५
५४)	पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंके सागरोपमशतपृथक्त्वप्रमाण अन्तर कहते समय 'देशोन' पद क्यों नहीं कहा? विवक्षित जीवको संज्ञी, सम्मूर्च्छिम पंचेन्दियोंमें उत्पन्न कराकर और सम्यक्त्वको ग्रहण कराकर मिथ्यत्वके द्वारा अन्तरको प्राप्त क्यों नहीं कराया? इत्यादि शंकाओंका समाधान	७३
५५)	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय-पर्याप्तकोंमें चारों उपशामकोंका अन्तर	७५-७६
५६)	उक्त जीवोंमें चारों क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवलीका अन्तर	७७
५७)	पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंका अन्तर	,,
	३ कार्यमागर्णणा	**७८-८७**
५८)	पृथिवीकायिक आदि चार स्थावर कायिकोंका अन्तर	७८
५९)	वनस्पतिकायिक बादर, सूक्ष्म और पर्याप्तक तथा अपर्याप्तक जीवोंका अन्तर	७९-८०
६०)	त्रसकायिक और त्रसकायिक-पर्याप्तकोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुण स्थान तकके जीवोंका पृथक्	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	पृथक् अन्तर-निरूपण	८०-८६
६१)	त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तकोंका अन्तर	८६-८७
	४ योगमार्गणा	**८७-९४**
६२)	पांचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी, काययोगी और औदारिककाययोगी मिथ्या-दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत और सयोगि-केवली ज़िनका अन्तर	८७
६३)	उक्त योगवाले सासादन-सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्या-दृष्टि जीवोंका अन्तर	८८
६४)	उक्त योगवाले चारों उप-शामक और चारों क्षपकोंका अन्तर	८८-८९
६५)	एक योगके परिणमन-कालसे गुणस्थानका काल संख्यात-गुणा है, यह कैसे जाना? इस शंकाका समाधान	८९
६६)	औदारिकमिश्रकाययोगी मि-थ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवलीका पृथक् पृथक् अन्तर-प्रतिपादन	८९-९१
६७)	वैक्रियिककाययोगी चारों गुणस्थानवर्ती जीवोंका अन्तर	९१
६८)	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मि-थ्यादृष्टि, सासादनसम्य-ग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर	९१-९३
६९)	आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्त-संयतोंका अन्तर	९३
७०)	कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयत-सम्यग्दृष्टि और सयोगिके-वलीका अन्तर	,,
	५ वेदमार्गणा	**९७-१११**
७१)	स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर	९४
७२)	स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों-का अन्तर	९५-९६
७३)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तकके स्त्रीवेदी जीवोंका अन्तर	९७-९८
७४)	स्त्रीवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण उपशामकका अन्तर	९९-१००
७५)	स्त्रीवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण क्षपकका अन्तर	१००
७६)	पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका ग्दृष्टि अन्तर	,,
७७)	पुरुषवेदी सासादनसम्य-ग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि-योंका अन्तर	१०१
७८)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तकके पुरुषवेदी जीवोंका अन्तर	१०२-१०४
७९)	पुरुषवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण उपशामक तथा क्षपकोंका पृथक् पृथक् अन्तर-प्रतिपादन	१०४-१०६
८०)	नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर	१०६
८१)	सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक पृथक् पृथक् नपुंसकवेदी जीवोंका अन्तर	१०७-१०९
८२)	अपगतवेदी जीवोंका अन्तर	१०९-१११
८३)	मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्म-साम्पराय गुणस्थान तक चारों कषायवाले जीवोंका तदन्तर्गत शंका-समाधान-पूर्वक अन्तर-निरूपण	१११-११२
८४)	अकषायी जीवोंका अन्तर	११३
	७ ज्ञानमार्गणा	**११४-१२७**
८५)	मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि तथा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर	११४
८६)	आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुत, - ५ ज्ञानी और अवधिज्ञानी असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोका अन्तर	११४-११६
८७)	उक्त तीनों ज्ञानवाले संयता-संयतोंका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक अंतर-निरूपण	११६-११९
८८)	संज्ञी, सम्मूर्च्छिम पर्याप्तक जीवोंमें अवधिज्ञान और उप-शमसम्यक्त्वका अभाव है, यह कैसे जाना? इस शंकाका तथा इसीसे सम्बन्धित अन्य अनेकों शंकाओंका सप्रमाण समाधान	११८-११९
८९)	तीनों ज्ञानवाले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर तथा तदन्तर्गत विशेषताओंका प्रतिपादन	११९-१२२
९०)	तीनों ज्ञानवाले चारों उप-शामक और चारों क्षपकोंका पृथक् पृथक् अन्तरनिरूपण	१२२-१२४
९१)	प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीण-कषाय गुणस्थान तक मनः-पर्यज्ञानी जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर-निरूपण	१२४-१२७
९२)	केवलज्ञानी जीवोंका अन्तर	१२७
	७ संयममार्गणा	**१२८-१३५**
९३)	प्रमत्तसंयतसे लेकर अयोगि-केवली गुणस्थान तक समस्त संयतोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१२८
९४)	सामायिक और छेदोप-स्थापनासंयमी प्रमत्तसंयतादि चारों गुणस्थानवर्ती जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१२८-१३१
९५)	परिहारशुद्धिसंयमी प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर	१३१
९६)	सूक्ष्मसाम्परायसंयमी उप-	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
९७)	शामक और क्षपक सूक्ष्म-यथाख्यात विहारसंयमी चारों गुणस्थानोंका अन्तर	''
९८)	संयतासंयतोंका अन्तर	१३३
९९)	असंयमी चारों गुणस्थानोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१३३-१३५
	९ दर्शनमार्गणा	**१३५-१४३**
१००)	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर	१३५
१०१)	चक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर	१३६-१३७
१०२)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तकके चक्षुदर्शनी जीवोंका अन्तर	१३८-१४१
१०३)	चक्षुदर्शनी चारों उपशामकोंका अन्तर	१४१
१०४)	चक्षुदर्शनी चारों क्षपकोंका अन्तर	१४२
१०५)	अचक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१४३
	१० लेश्यामार्गणा	**१४३-१५४**
१०६)	कृष्ण, नील, और कापोत-लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृटि जीवोंका अन्तर	१४३-१४५
१०७)	उक्त तीनों अशुभ लेश्या-वाले सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर	१४५-१४६
१०८)	मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्त-संयत गुणस्थान तक तेजो-लेश्या और पद्मलेश्यावाले जीवोंका पृथक् पृथक् अंतर	१४६-१४९
१०९)	मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगि-केवली गुणस्थान तक शुक्ललेश्यावाले जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१४९-१५४
	११ भव्यमार्गणा	**१५४**
११०)	समस्त गुणस्थानवर्ती भव्य-जीवोंका अन्तर	१५४
१११)	अभव्य जीवोंका अन्तर	''
	१२सम्यक्त्वमार्गणा	**१५५-१७१**
११२)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक सम्यग्दृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१५५-१५६
११३)	क्षायिकसम्यक्त्वी असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर	१५६-१५७
११४)	क्षायिकसम्यक्त्वकी संयता-संयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर	१५७-१६०
११५)	क्षायिकसम्यक्त्वी चारों उपशामकोंका अन्तर	१६०-१६१
११६)	क्षायिकसम्यक्त्वी चारों क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवलीका अन्तर	१६१-१६२
११७)	असंयतसम्यग्दृष्टि आदि	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	चार गुणस्थानवर्ती वेदक-सम्यग्दृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१६२-१६५
११८)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तक उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१६५-१७०
११९)	सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्या दृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् अन्तर	१७०-१७१
	१३ संज्ञिमार्गणा	**१७१-१७२**
१२०)	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय तक संज्ञी जीवोंका अन्तर	१७१
१२१)	असंज्ञी जीवोंका अन्तर	१७२
	१४ आहारमार्गणा	**१७३-१७९**
१२२)	आहारक मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अंतर	१७३-१७४
१२३)	असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणसथानवाले आहारक जीवोंका अन्तर	१७४-१७७
१२४)	आहारक चारों उपशामकोंका अन्तर	१७७-१७८
१२५)	आहारक चारों क्षपक और सयोगिकेवलीका अन्तर	१७८
१२६)	अनाहारका जीवोंका अन्तर	१७८-१७९

भावानुगम

१

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	विषयकी उत्थानिका	**१८३-१९३**
१)	धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा	१८३
२)	भावानुगमकी अपेक्षा निर्देश-भेद निरूपण	"
३)	नामभाव, स्थापनाभाव, द्रव्य-भाव और भावभाव, इन चार प्रकारके भावोंका सभेद-स्वरूप-निरूपण	१८३-१८५
४)	प्रकृतमें नोआगमभावभावसे प्रयोजनका उल्लेख	१८५
५)	नाम और स्थापनामें कोई विशेषता न होनेसे तीन ही निक्षेप कहना चाहिए? इस शंकाका सयुक्तिक और सप्रमाण समाधान	१८५-१८६
६)	औदयिकादि पांच भावोंमेंसे प्रकृतमें किस भावसे प्रयोजन है ? भावोंके अनेक भेद हैं, फिर यहां पांच ही भेद क्यों कहे? इन शंकाओंका समाधान	१८६-१८७
७)	निर्देश, स्वामित्व आदि छह अनुयोगद्वारोंसे भावका स्वरूप-निरूपण	१८७-१८८
८)	औदयिकभावके स्थान और विकल्पकी अपेक्षा भेद तथा स्थानका स्वरूप-निरूपण	१८९
९)	असिद्धत्व किसे कहते हैं? जाति, संस्थान , संहनन आदि औदयिकभावोंका किस भावमें अन्तर्भाव होता है?	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	इन शंकाओंका समाधान	१८९
१०)	औपशमिकभावके स्थान और विकल्पकी अपेक्षा भेद-निरूपण	१९०
११)	औपशमिकचारित्रके सात भेदोंका विवरण	,,
१२)	क्षायिकभावके स्थान और विकल्पकी अपेक्षा भेद	१९०-१९१
१३)	क्षायोपशमिकभावके स्थान और विकल्पकी अपेक्षा भेद	१९१-१९२
१४)	पारिणामिकभावके भेद	,,
१५)	सान्निपातिकभावका स्वरूप और भंग-निरूपण	१९३
१६)	भंगोंके निकालनेके लिए करणसूत्र	,,
	२	
	ओघसे भावानुगमनिर्देश	**१९४-२०६**
१७)	मिथ्यादृष्टि जीवके भावका निरूपण	१९४
१८)	मिथ्यादृष्टि जीवके अन्य भी ज्ञान-दर्शनादिक भाव पाये जाते हैं, फिर उन्हें क्यों नहीं कहा? इस शंकाको उठाते हुए गुणस्थानोंमें संभव भावोंके संयोगी भंगोंका निरूपण तथा उक्त शंकाका समाधान	१९४-१९६
१९)	सासादनसम्यग्दृष्टि जीव के भावका निरूपण	१९६
२०)	दूसरे निमित्तसे उत्पन्न हुए भावको पारिणामिक माना जा सकता है, या नहीं, इस शंकाका सयुक्तिक समाधान	,,
२१)	सत्त्व, प्रमेयत्व आदिक भाव कारणके विना उत्पन्न होनेवाले पाये जाते हैं, फिर यह कैसे कहा कि कारण के विना उत्पन्न होनेवाले परिणामका अभाव है? इस शंकाका समाधान	१९७
२२)	सासादनसम्यग्दृष्टिपना भी सम्यक्त्व और चारित्र, इन दोनोंके विरोधी अनन्तानुबन्धी कषायके उदयके विना नही होता है, इसलिए उसे औदयिक क्यों नही मानते हैं? इस शंकाका समाधान	,,
२३)	सासादनसम्यक्त्वको छोडकर अन्य गुणस्थानसम्बन्धी भावोंमें पारिणामिकपनेका व्यवहार क्यों नहीं किया जाता ? इस शंकाका तथा इसी प्रकारकी अन्य शंकाओंका समाधान	१९७
२४)	सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके भावका अनेक शंकाओंके समाधानपूर्वक विशद निरूपण	१९८-१९९
२५)	असंयतसम्यग्दृष्टि जीवके भावोंका अनेक शंका-समाधानोंके साथ विशद विवेचन	१९९-२००
२६)	असंयतसम्यग्दृष्टिका असयं-	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	तत्व औदयिकभावकी अपेक्षा है, इस बातका सूत्रकद्वारा स्पष्टीकरण	२०१
२७)	संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवोंके भावोंका तदन्तर्गत शंका-समधानपूर्वक निरूपण	२०१-२०३
२८)	दर्शनमोहनीयकर्मके उपशम, क्षय और क्षयोपशमकी अपेक्षा संयतासंयतोंके औपशमिदि भाव क्यों नहीं बत लाये? इस शंकाका समाधान	२०३
२९)	चारों उपशामकोंके भावोंका निरूपण	२०४-२०५
३०)	मोहनयीकर्मके उपशमसे रहित अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोमें औपशमिकभाव कैसे संभव है? इस शंकाका अनेक प्रकारोंसे संयुक्तिक समाधान	,,
३१)	चारों क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवलीके भावोंका तदन्तर्गत अनेकों शंकाओंका समाधान करते हुए विशद विवेचन	२०५-२०६
	३	
	आदेशसे भावानुगमनिर्देश	**२०६-२३८**
	१ गतिमार्गणा	**२०६-२१६**
	(नरकगति)	**२०६-२१२**
३२)	नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंक भाव	२०६
३३)	सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतिके सर्वघाति स्पर्धकोंके उदयक्षयसे, उन्हींके सदवस्थारूप उपशमसे, तथा सम्यक्त्वप्रकृतिके देशघाती स्पर्धकोंके उदयक्षयसे, उन्हींके सदवस्थारूप उपशमसे अथवा अनुदयोपशमसे और मिथ्यात्वप्रकृतिके सर्वघाती स्पर्धकोंके उदयसे मिथ्यादृष्टिभाव उत्पन्न होता है, इसलिए उसे क्षायोपशमिक क्यों न माना जाय? इस शंकाका सयुक्तिक समाधान	२०६-२०७
३४)	नारकी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके भाव	२०७
३५)	जब कि अनन्तानुबन्धी कषायके उदयसे ही जीव सासादनसम्यग्दृष्टि होता है, तब उसे औदयिकभाव क्यों न कहा जाय? इस शंकाका समाधान	२०७
३६)	नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके भावका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक निरूपण	२०८
३७)	नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके भाव	२०८-२०९
३८)	असंयतसम्यग्दृष्टि नारकियोंका असंयतत्व औदयिक है, इस बातका स्पष्ट निरूपण	२०९
३९)	प्रथम पृथिवीसे लेकर सातवीं	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	पृथिवी तक नारकी जीवोंके भावोंका निरुपण	२०९-२१२
	(तिर्यचगति)	**२१२-२१३**
४०)	सामान्य तिर्यंच, पंचेन्द्रिय-तिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंच योनि-मती जीवोंके सर्व गुणस्थान-सम्बन्धी भावोंका निरुपण तथा योनिमती तिर्यंचोंमें क्षायिकभाव न पाये जानेका स्पष्टीकरण	,,
	(मनुष्यगति)	**२१३**
४१)	सामान्यमनुष्य पर्याप्तमनुष्य और मनुष्यनियोंके सर्वगुण-स्थानसम्बन्धी भावोंका निरूपण	,,
४२)	लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य और तिर्यं-चोंके भोवोंका सूत्रकारद्वारा सूत्रित न होनेका कारण	२१३
	(देवगति)	**२१४-२१६**
४३)	चारों गुणस्थानवर्ती देवोंके भाव	२१४
४४)	भवनवासी, व्यन्तर-ज्योतिषी-देव और देवियोंके तथा सौधर्म-ईशान कल्पवासीदेवि-योंके भावोंका निरूपण	२१४-२१५
४५)	सौधर्म-ईशानकल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक देवोंके भावोंका विवरण	२१५-२१६
	२ इन्द्रियमार्गणा	**२१६-२१७**
४६)	मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिके-वली गुणस्थान तक पंचे-न्द्रियपर्याप्तकोंके भावोंका निरूपण. तथा एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और लब्ध्य-पर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीवोंके भाव न कहनेका कारण	२१६-२१७
	3 कायमार्गणा	**२१७-२१८**
४७)	त्रसकायिक और त्रसकायिक-पर्याप्तक जीवोंके सर्व गुण-स्थानसम्बन्धी भावोंका प्रति-पादन, तथा तत्सम्बन्धी शंका-समाधान	,,
	४ योगमार्गणा	**२१८-२२१**
४८)	पांचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी, काययोगी और औदारिककाययोगी जीवोंके भाव	२१८
४९)	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्य-ग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जीवोंके भावोंका पृथक् पृथक् निरूपण	२१८-२१९
५०)	औदारिकमिश्रकाययोगी अंस-यतसम्यग्दृष्टि जीवोंमें औप-शमिकभाव न बतलानेका कारण	२१९
५१)	चारों गुणस्थानवर्ती वैक्रियिक-काययोगी जीवोंके भाव	२१९-२२०
५२)	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि-जीवोंके भाव	२२०

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
५३)	आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवों-के भाव	,,
५४)	कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयत-सम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जीवोंके भाव	२२१
	५ वेदमार्गणा	**२२१-२२२**
५५)	स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुं-सकवेदी जीवोंके भाव	२२१
५६)	अपगतवेदी जीवोंके भाव	२२२
५७)	अपगतवेदी किसे कहा जाय? इस शंकाका सयुक्तिक समाधान	,,
	६ कषायमार्गणा	**२२३**
५८)	चतुष्कषायी जीवोंके भाव	,,
५९)	अकषायी जीवोंके भाव	,,
६०)	कषाय क्या वस्तु है, अकषा-यता किस प्रकार घटित होती है? इस शंकाका सयुक्तिक समाधान	२२३
	७ ज्ञानमार्गणा	**२२४-२२६**
६१)	मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवोंके भाव	२२४-२२५
६२)	मिथ्यादृष्टि जीवोंके ज्ञानको अज्ञानपना कैसे है? ज्ञानका कार्य क्या है? इत्यादि अनेकों शंकाओंका समाधान	,,
६३)	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और केवलज्ञानी जीवोंके भावोंका पृथक् पृथक् निरुपण	२२५-२२६
६४)	'सयोग' यह कौनसा भाव है? योगको कार्मणशरीरसे उत्पन्न होनेवाला क्यों न माना जाय? इन शंकाओंका सयुक्तिक समाधान	,,
	८ संयममार्गणा	**२२७-२२८**
६५)	प्रमत्तसंयतसे लेकर अयोगि-केवली गुणस्थान तक संयमी जीवोंके भाव	२२७
६६)	सामायिक छेदोपस्थाना, परिहारविशुद्धि और सूक्ष्म-साम्परायिक संयमी जीवोंके भावोंका पृथक् पृथक् निरुपण	,,
६७)	यथाख्यातसंयमी, संयमा-संयमी और असंयमी जीवोंके भावोंका पृथक् पृथक् निरूपण	२२८
	९ दर्शनमार्गणा	**२२८-२२९**
६८)	चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवोंके भाव	२२८
६९)	अवधिदर्शनी और केवल-दर्शनी जीवोंके भाव	२२९
	१० लेश्यामार्गणा	**२२९-२३०**
७०)	कृष्ण, नील और कापोत-लेश्यावाले आदिके चार गुणस्थानवर्ती जीवोंके भाव	२२९
७१)	तेजोलेश्या और पद्मलेश्या-वाले आदिके सात गुणस्थान-वर्ती जीवोंके भाव	,,
७२)	शुक्ललेश्यावाले आदिके तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके भाव	२३०
	११ भव्यमार्गणा	**२३०-२३१**

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
७३)	सर्वगुणस्थानवर्ती भव्य जीवोंके भाव	२३०
७४)	अभव्य जीवोंके भाव	,,
७५)	अभव्यमार्गणामें गुणस्थानके भावको न कह कर मार्गणा-स्थान-संबंधी भावके कहनेका क्या अभिप्राय है? इस शंकाका समाधान	२३०-२३१
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा	**२३१-२३७**
७६)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक सम्यग्दृष्टि जीवोंके भाव	२३१
७७)	उक्त गुणस्थानवर्ती क्षायिक-सम्यग्दृष्टि जीवोंके भावोंका और उनके सम्यक्त्वका तदन्तर्गत शंका-समाधान-पूर्वक निरुपण	२३१-२३४
७८)	असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती वेदकसम्य-ग्दृष्टि जीवोंके भावोंका और सम्यक्त्वका निरूपण	२३४-२३५
७९)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तक उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके भावोंका और सम्यक्त्वका निरूपण	२३५-२३६
८०)	सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्य-ग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंके भाव	२३६-२३७
	१३ संज्ञिमार्गणा	**२३७**
८१)	मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीण-कषाय गुणस्थान तक संज्ञी जीवोंके भाव	,,
८२)	असंज्ञी जीवोंके भाव	,,
	१४ आहारमार्गणा	**२३८**
८३)	मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगि-केवली गुणस्थान तक आहा-रक जीवोंके भाव	,,
८४)	अनाहारक जीवोंके भाव	,,
	अल्पबहुत्वानुगम	
	१	
	विषयकी उत्थानिका	**२४१-३५०**
१)	धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा	२४१
	अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश-भेद-निरूपण	,,
२)	नाम-अल्पबहुत्व, स्थापना अल्पबहुत्व, द्रव्य-अल्पबहुत्व और भाव-अल्पबहुत्व इन चार प्रकारके अल्पबहुत्वोंका सभेद-स्वरूप-निरूपण	२४१-२४२
३)	प्रकृतमें सचित्त द्रव्याल्प-बहुत्वसे प्रयोजनका उल्लेख	२४२
४)	निर्देश, स्वामित्व आदि छह अनुयोगद्वारोंसे अल्पबहु-त्वका स्वरूप-निरूपण	२४२-२४३
५)	ओघ और आदेशका स्वरूप	
	२	
	ओघसे अल्पबहुत्वानुगमनिर्देश	**२४३-२६१**
६)	अपूर्वकरणादि तीन गुणस्थान-वर्ती उपशामक जीवोंका प्रवेशकी अपेक्षा अल्पबहुत्व	२४३-२४४

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
७)	अपूर्वकरण आदिके कालोंमें परस्पर हीनाधिकता होनेसे संचय विसदृश क्यों नहीं होता? इस शंकाका सयुक्तिक समाधान	२४४
८)	उपशान्तकषायवीतरागछद्म-स्थोंका अल्पबहुत्व	२४५
९)	क्षपक जीवोंका अल्पबहुत्व	२४५-२४६
१०)	सयोगिकेवली और अयोगि-केवलीका प्रवेशकी अपेक्षा अल्पबहुत्व	२४६
११)	सयोगिकेवलीका संचय-कालकी अपेक्षा अल्पबहुत्व	२४७
१२)	प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवोंका अल्पबहुत्व	२४७-२४८
१३)	संयतासंयतोंका अल्पबहुत्व और तत्संबंधी शंकाका समाधान	२४८
१४)	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व और तदन्तर्गत अनेक शंकाओंका समाधान	२४८-२४९
१५)	सासादनसम्यग्दृष्टियोंका गुण-कार बतलाते हुए गुणकारके तीन प्रकारोंका वर्णन	२४९
१६)	सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयत-सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका सयुक्तिक एवं सप्र-माण अल्पबहुत्व-निरूपण	२५०-२५३
१७)	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहु-त्वका अनेक शंकाओंके समा-धानपूर्वक सयुक्तिक निरूपण	२५३-२५६
१८)	संयतासंयत गुणस्थानमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहु-त्वका तदन्तर्गत अनेक शंका-ओंके समाधानपूर्वक सयुक्तिक निरूपण	२५६-२५७
१९)	प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	२५८
२०)	उपशामक और क्षपकोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व तथा तदन्तर्गत अनेक शंका-ओंका समाधान	२५८-२६१
	३	
	आदेशसे अल्पबहुत्वानुगम-निर्देश	**२६१-३५०**
	१ गतिमार्गणा	**२६१-२८७**
	(नरकगति)	**२६१-२६७**
२१)	सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्य-ग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्य-ग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नारकी जीवोंके अल्पबहुत्वका क्रमशः सयुक्तिक निरूपण	२६१-२६३
२२)	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें नारकियोंका सम्यक्त्वसंबंधी अल्पबहुत्व	२६३-२६४
२३)	पृथक्त्व शब्दका अर्थ वैपुल्य-वाची कैसे लिया? इस शंकाका समाधान	२६४
२४)	सातों पृथिवियोंके नारकी जीवोंका पृथक् पृथक् अल्प-बहुत्व	२६४-२६७

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
२५)	अन्तर्मुहूर्तका अर्थ असंख्यात आवलियां लेनेसे उसका अन्त-र्मुहूर्तपना विरोधको क्यों नहीं प्राप्त होगा? इस शंकाका समाधान	२६६
	(तिर्यंचगति)	**२६८-२७३**
२६)	सामान्यतिर्यंच, पंचेन्द्रिय-तिर्यंच, पंचेन्द्रियपर्याप्त और पंचेन्द्रिययोनिमती तिर्यंचोंके तदन्तर्गत अनेक शंकाओंके समाधानपूर्वक अल्पबहुत्वका निरूपण	२६८-२७०
२७)	असंयतसम्यग्दृष्टि और संय-तासंयत गुणस्थानमें उक्त चारों प्रकारके तिर्यंचोंका सम्यक्त्वसंबंधी अल्पबहुत्व	२७०-२७३
२८)	असंयत तिर्यंचोंमें क्षायिक-सम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्य-ग्दृष्टि जीव क्यों असंख्यात गुणित हैं, इस बातका सयुक्तिक निरूपण	२७१
२९)	संयतासंयत तिर्यंचोंमें क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंका अल्पबहुत्व क्यों नहीं कहा? इस शंकाका समाधान	२७१
	(मनुष्यगति)	**२७३-२८०**
३०)	सामान्य मनुष्य, पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यनियोंके तदन्तर्गत शंका-समाधान-पूर्वक सर्व गुणस्थानसंबंधी अल्पबहुत्वका पृथक् पृथक् निरुपण	२७६
	(देवगति)	**२८०-२८७**
३१)	चारों गुणस्थानवर्ती अल्पबहुत्व	२८०
३२)	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें देवोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	२८०-२८१
३३)	भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी. देव और देवियोंका, तथा सौधर्म-ईशानकल्पवासिनी देवियोंका अल्पबहुत्व	२८१-२८२
३४)	सौधर्म- ईशानकल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक विमानवासी देवोंके चारों गुणस्थान-सम्बन्धी तथा सम्यक्त्व-सम्बन्धी अल्पबहुत्वका तद-न्तर्गत शंका-समाधान पूर्वक पृथक् पृथक् निरूपण	२८२-२८६
३५)	सर्वार्थसिद्धिमें असंख्यात देव क्यों नहीं होते? वर्ष-पृथक्त्वके अन्तरवाले आन-तादि कल्पवासी देवोंमें संख्यात आवलियोंसे भाजित पल्योपमप्रमाण जीव क्यों नहीं होते? इत्यादि अनेक शंकाओंका सयुक्तिक और सप्रमाण समाधान	२८६-२८७
	२ इन्द्रियमार्गणा	**२८८-२८९**
३६)	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त जीवोंका अल्पबहुत्व	,,

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
३७)	इन्द्रियमार्गणामें स्वस्थान-अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान-अल्पबहुत्व क्यों नहीं कहे ? इस शंकाका समाधन	२८९
	३ कायमार्गणा	**२८९-२९०**
३८)	त्रसकायिक और त्रसकायिक-पर्याप्त जीवोंका अल्पबहुत्व	,,
	४ योगमार्गणा	**२९०-३००**
३९)	पांचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी, काययोगी और औदारिककाययोगी जीवोंके संभव गुणस्थानसम्बन्धी और सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्वका पृथक् पृथक् निरूपण	२९०-२९४
४०)	औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली, असंयतसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्ग्ग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व	२९४-२९५
४१)	वैक्रियिककाययोगी जीवोंका अल्पबहुत्व	२९५-२९६
४२)	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयत-सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व	२९६
४३)	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	२९७
४४)	आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंका अल्पबहुत्व	२९७-२९८
४५)	उपशमसम्यक्त्वके साथ आहारकऋद्धि क्यों नहीं होती? इस शंकाका समाधान	२९८
४६)	कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली, सासादनसम्यग्दृष्टि,असंयत-सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व	२९८-२९९
४७)	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें कार्मणकाययोगी जीवोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	२९९-३००
४८)	पल्योपमके असंख्यातवें भाग-प्रमाण क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमेंसे असंख्यात जीव विग्रह क्यों नहीं करते? इस शंकाका समाधान	
	वेदमार्गणा	**३००-३११**
४९)	प्रारम्भके नव गुणस्थानवर्ती स्त्रीवेदी जीवोंका पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व	३००-३०२
५०)	असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती स्त्रीवेदियोंका पृथक् पृथक् सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	३०२-३०४
५१)	प्रारम्भके नव गुणस्थानवर्ती पुरुषवेदी जीवोंका पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व	३०४-३०६
५२)	असंयतसम्यग्दृष्टि आदि छह गुणस्थानवर्ती पुरुषवेदी	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	जीवोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व	३०६-३०७
५३)	आदिके नव गुणस्थानवर्ती नपुंसकवेदी जीवोंका पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व	३०७-३०८
५४)	असंयतसम्यग्दृष्टि आदि छह गुणस्थानवर्ती सम्यक्त्व-सम्बधी अल्पबहुत्व	३०९-३१०
५५)	अपगतवेदी जीवोंका अल्प-बहुत्व	३११
	६ कषायमार्गणा	**३१२-३१६**
५६)	चारों कषायवाले जीवोंका अल्पबहुत्व	३१२-३१४
५७)	अपूर्वकरण और अनिवृत्ति-करण, इन दो उपशामक गुणस्थानोंमें प्रवेश करनेवाले जीवोंसे संख्यातगुणित प्रमाण-वाले इन्हीं दो गुणस्थानोंमें प्रवेश करनेवाले क्षपकोंकी अपेक्षा सूक्ष्मसाम्परायिक उपशामक जीव विशेष अधिक कैसे हो सकते हैं ? इस शंकाका समाधान	३१२
५८)	असंयतसम्यग्दृष्टि आदि सात गुणस्थानवर्ती कषायी जीवोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व	३१५-३१६
५९)	अकषायी जीवोंका अल्पबहुत्व	३१६
	७ ज्ञानमार्गणा	**३१६-३२२**
६०)	मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवोंका अल्प-बहुत्व	३१६-३१७
६१)	आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुत-ज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों-का असंयतसम्ययग्दृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व	३१७-३१९
६२)	उक्त जीवोंका दसवें गुण-स्थान तक सम्यक्त्व-सम्बन्धी अल्पबहुत्व	३१९
६३)	प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीण-कषाय गुणस्थान तक मनः-पर्ययज्ञानी जीवोंका अल्प-बहुत्व	३२०
६४)	उक्त जीवोंका दसवें गुण-स्थान तक सम्यक्त्व-सम्बन्धी अल्पबहुत्व	३२१
६५)	केवलज्ञानी सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोंका अल्पबहुत्व	३२१-३२२
	८ संयममार्गणा	**३२२-३३०**
६६)	सामान्य संयतोंका प्रमत्त-संयतसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक अल्पबहुत्व	३२२-३२४
६७)	उक्त जीवोंका दसवें गुण-स्थान तक सम्यक्त्व-सम्बन्धी अल्पबहुत्व	३२४-३२५
६८)	प्रमत्तसंयतादि चार गुण-स्थानवर्ती सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंका अल्पबहुत्व	३२५-३२६

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
६९)	उक्त जीवोंका सम्यक्त्व-सम्बधी अल्पबहुत्व	३२६
७०)	परिहारशुद्धिसंयमी प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत गुणस्थान-वर्ती जीवोंका अल्पबहुत्व	३२७
७१)	उक्त जीवोंका सम्यक्तव-सम्बन्धी अल्पबहुत्व	,,
७२)	परिहारशुद्धिसंयतोंके उप-शमसम्यक्त्व नहीं होता है, इस सिद्धान्तका स्पष्टीकरण	,,
७३)	सूक्ष्मसांपरायिकयसंमी उप-शामक और क्षपक जीवोंका अल्पबहुत्व	३२८
७४)	यथाख्यातविहारशुद्धिसंय-तोंका अल्पबहुत्व	,,
७५)	संयतासंयतोंका अल्पबहुत्व	,,
७६)	संयतासंयतोंका और असयित-सम्यग्दृष्टि जीवोंका सम्य-क्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	३२८-३३०
	९ दर्शनमार्गणा	**३३१**
७७)	चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अव-धिदर्शनी और केवल-दर्शनी जीवोंका पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व	३२१
	१० लेश्यामार्गणा	**३३२-३३९**
७८)	आदिके चार गुण्साथानवर्ती कृष्ण, नील और कापोत-लेश्वाले जीवोंका अल्पबहुत्व	३३२
७९)	असंतयसम्यग्दृष्टि गुण-स्थानमें उक्त जीवोंका सम्य-क्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	३३२-३३३
८०)	आदिके सात गुणस्थानवर्ती तेज और पद्मलेश्यावाले जीवोंका पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व	३३४-३३५
८१)	असंयतम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमें उक्त जीवोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	३३५
८२)	मिथ्यादृष्टि आदि तेरह गुण-स्थानवर्ती शुक्ललेश्यावाले जीवोंका अल्पबहुत्व	३३६-३३८
८३)	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान-से लेकर दसवें गुणस्थान तक शुक्ललेश्यावाले जीवोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	३३८-३३९
	११ भव्यमार्गणा	**३३९-३४५**
८४)	सर्वगुणस्थानवर्ती भव्य जीवोंका अल्पबहुत्व	३३९
८५)	अभव्य जीवोंका अल्पबहुत्व	३४०
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा	**३४०-३४५**
८६)	सामान्य सम्यग्दृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व	३४०
८७)	चौथे गुणस्थानसे लेकर चौदह्वें गुणस्थान तक क्षायिक -सम्यग्दृष्टि जीवोंका अल्प-बहुत्व	३४०-३४२
८८)	असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमें एक ही पद होनेके कारण सम्यक्त्व-सम्बन्धी अल्पबहुत्व नहीं है,	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	इस बातका स्पष्टीकरण	३४२
८९)	असयंतसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती वेदकसम्य-ग्दृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व	३४२-३४३
९०)	उक्त जीवोंके सम्यक्त्व-सम्बन्धी अल्पबहुत्वके अभा-वका निरूपण	३४३
९१)	असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर उपशांतकषाय गुणस्थान तक उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व	३४४
९२)	उक्त जीवोंके सम्यक्त्वसंबंधी अल्पबहुत्वके अभावका स्पष्टी-करण	३४५
९३)	सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्य-ग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंके अल्पबहुत्वका अभाव प्रदर्शन	"
	१३ संज्ञिमार्गणा	**३४५-३४६**
९४)	आदिके बारह गुणस्थानवर्ती संज्ञी जीवोंका अल्पबहुत्व	३४५
९५)	असंज्ञी जीवोंके अल्पबहुत्वका अभाव-निरूपण	३४६
	१४ आहारमार्गणा	**३४६-३५०**
९६)	आदिके तेरह गुणस्थानवर्ती आहारक जीवोंकाअल्पबहुत्व	३४६-३४७
९७)	चौथेसे दसवें गुणस्थानवर्ती आहारक जीवोंका सम्यक्त्व-सम्बन्धी अल्पबहुत्व	३४८
९८)	अनाहारक जीवोंका अल्पबहुत्व	३४८-३४९
९९)	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें अनाहारक जीवोंकासम्य-क्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व	३४९-३५०